''हसीनाबाद'' पुस्तक परीक्षण

डॉ. गीता यादव

असिस्टेंट प्रोफेसर, हिंदी विभाग,

एस.एम.आर.के. महिला महाविद्यालय,

नाशिक–422005

ईमेल – हममजंलंकंअण्उता/हउंपसण्बवउ

हसीनाबाद उपन्यास एक गुमान बस्ती की बदनाम दास्तॉ है । वस्तुतः 'हसीनाबाद' के नान से ये भ्रम हो सकता है कि यह उपन्यास स्त्रियों की दषा–दुर्दषा पर केंद्रित है लेकिन नहीं, 'हसीनाबाद' खालिस राजनीतिक उपन्यास है जिसमें इसकी लेखिका औसत को केन्द्र में लाने के उपक्रम में विषिश्ट को व्यापक से सम्बध्द करती चलती है । उपन्यास के पहले पृश्ठ में ही रामबालक गोलमी से कहते नजर आते हैं कि ''गोलमी... मैं रिष्तों के व्याकरण में बहुत कच्चा हूॅ । यह सब नहीं बूझता, इसलिए आज तक अकेला हूॅ। मैं समय के षून्य पर खडा हुआ राजनीति का खिलाडी हूॅ, राजनीति ओढता–बिछाता हूॅ । (2)

'गीताश्री' का यह उपन्यास एक गॉव की स्त्री की सतह से ऊपर उठने का स्वप्न है। स्त्री को अपनी रचनाओं में सतह से ऊपर उठाने का स्वप्न देखने की ऑखे तो कई लेखिकाओं के पास है लेकिन देखे गये स्वप्न को आदर्ष और यथार्थ के संतुलन के साथ चरित्रों को मंजिल तक पहुॅचाने का हुनर सिर्फ गीताश्री के पास ही दिखाई देता है। इस उपन्यास की नायिका के चरित्र की गढते हुए गीताश्री उसको वैषाली की मषहूर चरित्र आम्रपाली बना देती हैं, यह रचना कौषल पाठकों की न केवल चमत्कृत कर सकती है बल्कि आलोचकों के सामने एक चुनौती बनकर भी खडा हो सकता है।'(4)

हसीनाबाद उपन्यास की कथावस्तु नायिका गोलमी के इर्द–गिर्द गोल–गोल चक्कर लगाती है, जिसकी धुरी उसकी मॉ सुंदरी है। उपन्यास कई अंकों में विभाजित है। 'बिजली वाली लडकी' हो गया दिल का पुर्जा–पुर्जा, आगे गोलमी चिरइया, ऑखियॉ ंतो नदिया भयो, मन भए बारू–रेत, लापता नगर के बाषिन्दे 'हर गुलबदन ने मनाई बसन्त, दुख ने दुख से बात की, लोगवा मारे ला नजरिया, थर–थर कॉदे मोर प्राण हो', मर्द मार छोरी, प्रेमिका के हस्ताक्षर, पंडी जी पंडोल गोल, हरेक अदा को तेरे नाम दे' दिया, हमार जियरा डोले रे, सपने देखती नहीं बुनती है, बदनाम वस्ती की दास्तॉ, बाली उमरिया रे जट्टा, कोई एक राह तो होगी, दिल में लगन है, मिलन चाहता हूॅ, का खाऊॅ का पीऊॅ का ले परदेस जाऊॅ दुनिया न रही बेकाबू, कमजोर कौमें नेता पैदा नहीं करती, इतिहास की दहजीज पर, बरही–बरही खूॅटा चीर, पातर पिया के जुलुफिया, उठाये जा रहे सितम, हॉ मैं बेवफा हूॅ, ये जिन्दगी उसी की है' हमको उनसे है वफा

की उम्मीद, मोरा बलमा निठुर निरमोहिया न दैन्यं न पलायनम, कोयल बिन बगिया, बसन्त ऋतु आयल आदि अध्यायों में विभाजित हैं।

'हसीनाबाद' उपन्यास में प्रेम और राजनीति का पक्ष साथ–साथ चलता है किंतु राजनीति के विकृत स्वरूप के आगे प्रेम बीना हो जाता है। फिर चाहे वह प्रेम रामबालक–गोलमी का हो, अढाई सौ– गोलगी या खेंचरू–का गोलमी से एकतरफा प्रेम। प्रेम भले टाई आखर का हो किंतु प्रेम राजनीति के आगे बौना पड जाता है। दोस्ती भी झूठी साबित होती है। गोलमी और रज्जू की दोस्ती भी राजनीति के कारण दूर हाती है। राजनीति के कारण प्रेम भी दुय्यम हो जाता है। लेकिन इस उपन्यास की सबसे बडी विषेशतं जो है वह लोकनृत्य की तरफ नायिका का फोकस्ड होना। स्वंय अपनी पहचान बनाये रखने का जज्बा कायम रखना। राजनीति की षोर और चकाचौंध में भी वह अपनी कला को बचाये रखने को तत्पर है। राजनीतिक जीत के पटाखों और बाजों के षीर में भी घुंघरू की आवाज उसे अपनी ओर आकर्शित करती नजर आती है।

कथा का प्रारंभ हसीनाबाद से होती है जो अब हुसैनबाद में तब्दील हो चुका है। हसीनाओं से आवाद इस नगर की की हसीनायें अपने बेहिसाब दर्द में बर्बाद थीं। हसीनायें वहॉ पर बस कुछ समय के लिए ही हसीन रहती थीं, फिर खंडहर और मलबों में बदल जाती थीं। एक भरी पूरी बस्ती थी हसीनाबाद। एक लापता नगर । लापताओं की बस्ती कहें। ठाकुरों द्वारा अपनी अयाषियों के लिए बसाई गई हसीनाओं की बस्ती हसीनाबाद। हर घर में ठाकुरों की हसीनायें रहती थीं। देष भर से चुन–चुनकर लायी गयी हसीनायें । इन्हीं हसीनाओं में एक हसीना 'सुंदरी देवी। सुन्दरी देवी एक बहुत ही रौबीले ठाकुर के द्वारा पोशित हसीना थी। ठाकूर साहब अपने गॉव की प्राचीन परंपरा का निर्वाह कर रहे थे।

'इसी बसती में ठाकुरों के तमाम परिवार आकार ले रहे थे। ठाकुर आते थे, रात में महफिलें जमती थीं, तो परिवार का बढना स्वाभाविक ही था। मगर अस्वाभाविक था उन परिवारों का एक नया रूप लेना। ये परिवार की जिम्मेदारी थी। ठाकुर लोग इस बस्ती में अपने पिता को जिम्मेदारी भी उठा रहे थे । और सबने इसी बस्ती कें समानान्तर एक–एक परिवार भी बसा रखा था। ठाकुरों की बीवियॉ उन्हे दूसरी बीवी का दर्जा नहीं देती थीं। ये सब रखैलें थीं, उनकी नजर में भी और ठाकुरों की नजर में भी उनके बच्चे भी अवैध थे जो मतलब से पालो जा रहे थे।'(5)

देखते देखते सुंदरी भी दो बच्चों की मॉ बन जाती है। रमेष और गोलमी। रमेष की तरफ से निष्चिंत थी सोचती– ''चलो, बहादुर ही तो बनेगा, ठाकुर साहब की संगति में रहेगा।' लेकिन बेटी । क्या करेगी, कहॉ जायेगी? इसी बस्ती में किसी और ठाकुर की रखैल... नाच–गाना, अय्याषी का सामान? क्या वह इस देके बाजार में एक और हसीन देह व्यापार के लिए तैयार कर रही है? इन्हीं आषंकाओं से भर

सुंदरी देवी ने कीर्तन मंडली के सदस्य टेढे हाथों वाले सगुन महतो का दामन थाम लिया सिर्फ बेटी के उज्ज्वल भविश्य के लिए।

'सुंदरी' देवी का सपना बस इतना था कि 'गोलमी' पढ–लिखकर मस्टरनी बन जाये। वह उसे नौकरी करते देखना चाहती थी। किंतु गोलमी को तो पायलों की रूनझुन के आगे किताबों के अक्षर तांडव करते नजर आते। धीरे–धीरे उसने अपनी नर्तक मंडली की टीम तैयार कर ली। ''सोन चिरइया ऑर्केस्ट्रा'' का निर्माण भी कर डाला। जिसमें बज्जिकांचल और मिथिलांचल के लोकगीतों को बचाये रखने के लिए कार्य किया जाने लगा। बिठौली चाची से उसने जाट–जाटिन की नाच भी सीख लिया। चाची अपने पुराने लोकगीतों की डायरी गोलमी को विरासत रूप में सौंपते हुये कहती है– ''संभालकर रखना, इसमें लोकगीतों का खजाना है। जन्म से लेकर मरन तक के गीत हैं इसमें सीता की व्यथा है, जाट–जाटिन है, डोमकक्ष के गीत हैं, जगदम्बा का भजन है, सोहर झूमर सब कुछबहुत सालों की मेहनत से तैयार की है यह कॉपी।'' (5)

गोलामी की मंडली अब ख्याति पाने लगी बडी–बडी उसके नाच और गाने का इतना असर होने लगा कि सरकारी योजनाओं के प्रचार को और भी ज्यादा फैलाने के लिए इनकी टोली काम करने लगी। उसकी सखी रज्जो गीत लिखने लगी। रज्जो द्वारा टोली के मैनेजमेंट का सारा काम किया जाने लगा। रज्जो चूकि अति महत्वाकांक्षी होने के कारण गोलमी से डाह करने लगती है किंतु दिल और दिमाग का नियंत्रण भी वह अच्छी तरह करना जानती है इसलिए वह मन पर काबू रखकर गोलमी की तरक्की में मदद करती। क्योंकि वह जानती थी कि गोलमी की तरक्की में ही उसकी तरक्की निहित है। इसी प्रकार हाजीपुर के जलसे में रामबालक सिंह का इत्फाक से सगुन महतो से मिलना। गोलमी की आर्केस्ट्रा टोली से मिलना। गोलमी द्वारा रामबालक सिंह के एन.जी.ओ. स्ट्राल का उद्घाटन करना। गोलमी का पिता की उम्र के रामबालक से लगाव आदि के माध्यम से राजनीतिक कथा आगे बढती जाती है।

गोलमी पहले चुनाव में रामबालक के वोट के लिए प्रचार रकती है रामबालक जीतकर आते हैं किंतु सरकार अधिक दिन तक नहीं चल पाती रामबालक की पार्टी और सजावल सिंह की ओर से अगले चुनाव के लिए गोलमी को खडा किया जाता है। गोलमी चुनाव के प्रचार–प्रसार में जब व्यस्त होती है तो उसकी सहेली रज्जो विपक्ष की ओर से खडी हो जाती है जिससे गोलमी को मानसिक आघात लगता है। ऐसे समय में उसका बचपन का साथी अढाई सौ उसके साथ खडा रहता है। पार्टी की जीत के बाद गोलमी और सजावल का मिलन सुंदरी करवाती है। गोलमी हसीनाबाद बस्ती जो कि हुसैनबाद में तब्दील हो चुकी है उसके इतिहास से परिचित होती है वह अपने जैसों का उत्थान करने के लिए काफी कुछ करना चाहती है। गोलमी के चुनाव जीतने के बाद रज्जो फिर उसके पास चली आती है किंतु गोलमी एक बार फिर दोस्ती में छुरा भौंके जाने के कारण निरीह हो जाती है। मीडिया उसकी एक एक बात

पकडकर बातों को तूल देने और अफवाह फैलाने का काम करती है। अढाई सौ गोलमी को समझाता है, ''राजनीति तो उनके लिए है, जिनके लिए कुछ और नहीं। जो मूर्ति नहीं बना सकते, जो चित्र नहीं रंग सकते, जो गीत नहीं गा सकते जो कुछ भी नहीं कर सकते उन सब अयोग्यों के लिए ही राजनीति है, आखिर अयोग्यों के लिए भी कुछ होना चालिए? जिनमें और कोई योग्यता नहीं है, उनमें राजनीति की योग्यता होती है। राजनीति के लिए बुध्दि् नहीं होनी चाहिए, क्योंकि बुध्दि्मान आदमी इतनी बेईमानी नही कर सकता, कुछ तो सोचेगा ही ...'' (6) (पृश्ठ 220)

अस्तु कह सकते हैं कि 'हसीनाबाद' उपन्यास हिंदी साहित्य जगत की अमूल्य निधि है। साहित्यिक, पाठक, आलोचक, राजनीतिज्ञ, विद्यार्थी इसका अध्ययन कर सकते हैं। सुझाव रूप में कहा जाये तो कह सकते हैं कि उपन्यास को जो विभिन्न अध्यायों में बॉटा गया है कई जगहों पर अध्याय का षीर्शक देना छूट गया है जैसे पृश्ठ 117, 127, 139, 145, 149, 151, 159, 161, 164 आदि। पुस्तक एक में पढने का मन करता है। एक सच्ची और अच्छी नर्तकी के जीवन संघर्शों की गाथा है 'हसीनाबाद'। यह राजनीति सामन्ती व्यवस्था की लोक–कला की एक दारूण उपज है जिससे हिन्दी उपन्यासों में लोक की वापसी का स्वप्न एक बार फिर से साकार हो उठा है। कह सकते हैं कि गीताश्री का ये उपन्यास लोकजीवन की दयनीय महानता की दिलचस्प दास्तॉहै।

संदर्भः

1. हसीनाबादः गीताश्रीः वाणी प्रकाषन, नयी दिल्ली–11002
2. हसीनाबादः गीताश्रीः वाणी प्रकाषन, नयी दिल्ली–11002, पृश्ठ 6
3. फ्लैप से
4. हसीनाबादः गीताश्रीः वाणी प्रकाषन, नयी दिल्ली–11002, पृश्ठ 33
5. हसीनाबादः गीताश्रीः वाणी प्रकाषन, नयी दिल्ली–11002, पृश्ठ 97
6. हसीनाबादः गीताश्रीः वाणी प्रकाषन, नयी दिल्ली–11002, पृश्ठ 220